रानियां-हरियाणा। शिवरात्रि महोत्सव में मुख्य अतिथि सांसद चरणजीत सिंह रोडी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. ललिता तथा ब्र.कु. रेखा।

राजसमंद-राज.। 'खुशनुमा जीवन' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सांसद हरिओम राठौर, एल.आई.सी. मैनेजर प्रदीप अग्रवाल, ब्र.कु. शीलू, ब्र.कु. रीटा, ब्र.कु. पूनम तथा अन्य।

शांतिवन। महामण्डलेश्वर श्री श्री स्वामी राघवानंदजी महाराज,कर्नाल,प.बं. को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. दत्तात्रय।

आरा-बिहार। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान जिलाधिकारी वीरेन्द्र कुमार यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रूपा। साथ हैं ब्र.कु. सुरभि।

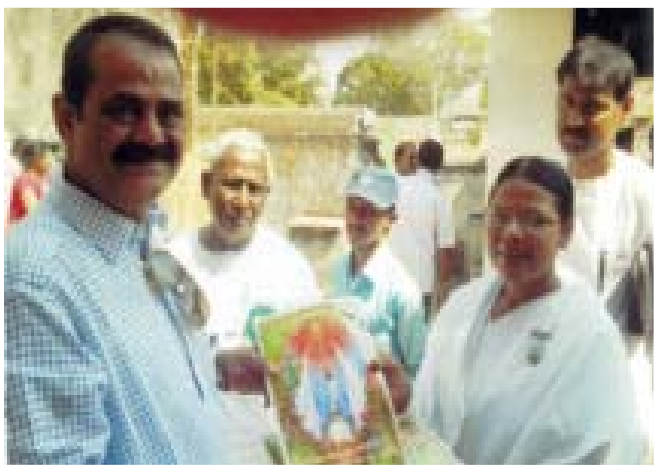

बैपारीगुड़ा-जयपुर(ओडिशा)। मुलाकात के दौरान विधायक श्री युक्त ताराप्रसाद बाहिनी पती को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुषमा।

बरपाली-ओडिशा। 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ अभियान' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. धीरेन्द्र नाथ मुण्ड, ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. मामी तथा ब्र.कु. स्नेहा।

कैसी होती है भगवान की गिफ्ट...?

- गतांक से आगे...

दसवें अध्याय में, विभूति विस्तार योग बताते हैं भगवान। असीम सत्य की अपार महिमा सुनाते हैं। बल, सौन्दर्य, ऐश्वर्य या उत्कृष्टता प्रदर्शित करने वाली समस्त अद्भुत घटनायें चाहे वह इस लोक में है या आध्यात्मिक जगत में, परमात्मा की दैवी शक्तियां एवं ऐश्वर्यों की असीम अभिव्यक्तियां हैं। समस्त कारणों के कारण स्वरूप परमात्मा समस्त जीवों के परम पूज्यनीय हैं। कितना ऐश्वर्य और कितनी विशालता है उसका प्रदर्शन करते हैं भगवान और अर्जुन को रियलाइज़ कराने का प्रयत्न करते हैं।

पहले श्लोक से लेकर सातवें श्लोक तक भगवान की विभूति और योग शक्ति का कथन तथा उनके जानने का फल बताया गया है।

आठवें श्लोक से लेकर ग्यारहवें श्लोक तक फल और प्रभाव सहित भक्ति योग का कथन है।

बारहवें श्लोक से लेकर अठारहवें श्लोक तक अर्जुन भगवान की स्तुति तथा विभूति और योग शक्ति कहने के लिए प्रार्थना करता है।

उन्नीसवें श्लोक से लेकर बयालीसवें श्लोक तक भगवान अपनी विभूतियों का और योग शक्ति का कथन सुनाते हैं।

इस तरह से भगवान अपने प्रिय अर्जुन को अपनी उत्पत्ति का रहस्य युक्त श्रेष्ठ ज्ञान देते हुए कहते हैं कि ''न देवता और न ही महर्षिगण उनकी उत्पत्ति का रहस्य जानते हैं।'' संसार में जब देवतायें नहीं जानते, महर्षिगण नहीं जानते तो मनुष्य क्या जानेगा! ये तो सोचने की बात है। इसीलिए भगवान ने बहुत स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि मेरी उत्पत्ति का रहस्य युक्त श्रेष्ठ ज्ञान न देवता जानते हैं और न महर्षिगण जानते हैं। मोह रहित, पाप रहित, ज्ञान-ध्यान से युक्त मनुष्य ही मुझ अजन्मा, अनादि के यथार्थ रूप को जान लेते हैं। पुन: भगवान ने अपने अव्यक्त स्वरूप के विषय में स्पष्ट किया कि मैं ''अजन्मा हूँ, अनादि हूँ'' और कहा कि मनुष्यात्मा में जो गुण विद्यमान हैं, वह मेरे द्वारा दिये गए हैं। हर एक के अंदर कोई न कोई ऐसे गुण ज़रूर हैं। इसीलिए दुनिया में भी ये कहावत है कि 'किसी व्यक्ति के अंदर निन्यानवे अवगुण हों लेकिन एक गुण तो होगा ही' वो एक दो गुण जितने भी हैं वो ईश्वर द्वारा प्राप्त है। वो ईश्वर की सबसे बड़ी गिफ्ट होती है मनुष्य जीवन को अर्थ पूर्ण बनाने के लिए। जिसके लिए कहा जाता है कि भगवान ने कोई न कोई ऐसी विशेषता या गुण अवश्य दिया होगा। तो भगवान यही बात स्पष्ट करते हैं कि मनुष्यात्मा में जो गुण विद्यमान है, वह मेरे द्वारा दिया गया है। दैवी संस्कार है, जो मैंने संकल्प से उन्हें प्रदान किया है। भगवान कैसे देता है। वह तो अजन्मा है, अव्यक्त है तो देगा कैसे? वो कोई शारीरिक चीज़ नहीं है, स्थूल चीज़, भौतिक चीज़ नहीं है जो उठा करके दे दे।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

भगवान संकल्पों के द्वारा, उसके अंदर वो दैवी शक्ति उसको गिफ्ट के रूप में देते हैं। इसीलिए ये सब मेरी संकल्प की रचना है। जो पुरुष ज्ञान के आधार से मेरी इस विभूति और योग को जानता है, वह निश्चयात्मक योग-युक्त हो जाता है। उसमें कुछ भी संशय नहीं रहता। उसमें क्षण भर भी संशय का संकल्प नहीं आता है। भगवान है या नहीं है, कैसा है क्या है? जिसने उसको जान लिया समझ लिया वह निश्चयात्मक हो जाता है। ज्ञान के आधार से जानने की बात पुन: दोहराई है कि जिनका मन निरंतर मुझमें रमा हुआ है, जिनका जीवन मेरी सेवा में समर्पित है, जो दूसरों को ज्ञान देते हैं, आपस में भी ज्ञान-चर्चा करते हैं, वह प्रसन्नता एवं दिव्य आनंद का अनुभव करता है। आपस में भी जब हम एक-दूसरे से बात करें, तो शुभ चिंतन ही करें। जैसे कि कहावत है ''परचिंतन पतन की जड़ है, आत्मचिंतन उन्नति की सीढ़ी है।'' जितना हो सके हम एक-दूसरे के प्रति भी उन्नति की बातें करते रहें। इसीलिए भगवान ने कहा कि जो आपस में भी ज्ञान-चर्चा करते हैं वो प्रसन्नता एवं दिव्य आनंद का अनुभव करते हैं। उन्हें मैं ज्ञान प्रदान करता हूँ कि कैसे वो मुझ तक आ सकते हैं। ये ज्ञान परमात्मा ही देता है। कोई मनुष्य नहीं दे सकता है। क्योंकि ये किसी के वश की बात ही नहीं है। भगवान को जानकर के पहचानना। जब तक वो खुद आकर के अपना परिचय न दे तब तक कैसे उसको जानेंगे। - क्रमश:

आचार विचार से... - पेज 2 का शेष

में भी कलयुग की प्रवेशता है। प्रजा को भी वक्रवाणी अच्छी लगने लगी है, इसलिए कोई नेता दूसरे नेता के लिए उल्टे बोल का प्रयोग करता है तो जनता तालियाँ बजाती है। लोकशाही तो विवेक पर्व होना चाहिए।

लुईस ने कहा है कि ''आज का मानव बीमार है। बीमारी बढ़ी है, उसका कारण न सिर्फ रोग-जंतु आदि हैं बल्कि मनुष्य भी खुद इसका ज़िम्मेवार है। मनुष्य अपने हृदय में कलयुग के स्वागत के लिए ऊँचे आसन सुरक्षित रखता है। कलयुग अपने साथ असत्य, प्रपंच, लोभ, लालच, विकृतियों, अहंकार जैसे खूब बड़े रसूखदार लेकर आता है और मनुष्य को परोसता है जिसमें से जो कुछ चाहिए या मनुष्य को अनुकूल हो, वो पसंद करने की छूट देता है। सत्य को मैंने दरवाज़े के बाहर बिठा दिया है, इसलिए उस तरफ झाँकने की ज़रूरत नहीं है। सत्य के हाथ खाली हैं, उल्टा ही तुम्हारे पास से कुछ मांगेगा।

लोग आज कलयुग की बातों में आ गये हैं। लुईस ऐल कहते हैं कि अपने शरीर की बीमारी हम स्वयं ने ही खड़ी की है। हर एक व्यक्ति स्वाधिकार और अपराध भाव से पीड़ित रहता है। क्रोध, ईर्ष्या, अपराध भाव बहुत नुकसान करता है।

स्वयं को बीमार होने से बचाने के लिए यह बातें अपने आप में स्वीकार कर लें -

1. मन को स्वस्थ और स्वच्छ रखें। सात्विक विचारों का आहार लें।
2. ईर्ष्या, द्वेष, निंदा, अहंकार, वैर वृत्ति के विषयों को मन में प्रवेश न होने दें।
3. आशंकित होना छोड़, संयम और सदाचार को जीवन में अग्रिम स्थान दें।
4. जिह्वा पर सम्पूर्ण नियंत्रण, स्वाद, मौज-मस्ती को भी त्यागें और पर निंदा को भी त्यागें।
5. प्राकृतिक जीवन और नि:स्वार्थ प्रेम को जीवन में अग्रिमता दें।
6. रोज़ आधा घण्टा शांति के वातावरण में बैठें और अपने आपसे बातें कर अपने अंदर छिपी खूबियों को निहारें और उसे व्यवहार में अपनायें।

ख़्यालों के आईने में...

किसी ने चाणक्य से पूछा...
ज़हर क्या है..?
चाणक्य ने जवाब दिया !!
हर वो चीज़ जो ज़िन्दगी में आवश्यकता से अधिक होती वही ज़हर है ! फ़िर चाहे वो ताकत हो, धन हो, भूख हो, लालच हो, अभिमान हो, आलस्य हो, महत्वाकांक्षा हो, प्रेम हो, आवश्यकता से अधिक 'ज़हर' ही है!

सोच ये ना रखें की मुझे रास्ता अच्छा मिले, बल्कि ये होना चाहिए कि मैं जहाँ पाव रखूँ वो रास्ता अच्छा हो जाए; क्यूँकि जो अपने कदमों की काबिलियत पर विश्वास रखते हैं, वो ही अक्सर मंज़िल पर पहुँचते हैं!